

[illegible]

गहं मुपासयुक्तं सो नृपतिर्धृति नत्वा कथं धनं मुदा । स्वपदं गन्तुं तदा यत्नं वाहि विनिर्धय ॥ कुरु मा र्गिणी वाजा इष्टं नाभान् यत्नमाना सेन्ये र्शं
 न्नरु सन्नाहं वाधयामासु सर्वं ॥ कथं नाभान् नृप इष्टं निरुद्धा ववहि मे । सेन्ये निरुद्धं मां गहं ध्यामां धनां गृहं ययुः ॥ अथ सो नृपती वाजा सेन्ये च तवा
 हनं शोकात्ता गहं रवगता इष्टा विस्मिन् रवपदं ययुः ॥ गहं विस्मिन् रवगता गहं नृप कय कुरु कुरु गहं ॥ पाषाणि धर्मि मया । गृहं सो ला कास्मा ययुः ॥ गहं वाव
 सिर्गहं ला सवर्गं रसं गहं जि न ॥ नका कुरु मही नी गहं मो हं ला भव मादि शता । गहं मो हं ला मो र्गं नृपं व कुरु स सेन्ये की । कु व ना गहं ॥ सो मुष्टा वज्र व
 र्धं नि वा नय न ॥ ॐ ह्यादि र्मुनी उ स पु त्वा मो हं ला मु डि न ॥ गहं वि स पु मि ह्ना य सह सो न दं ध मा य यी ॥ गहं मो र्गं नृपं इष्टं स सेन्ये सा धु मा चि र्गं ।
 गहं का यं से मो गे ल्य ॥ स मा धि वि द ध क र्ता ॥ अथ ना ग ग हं स व र्गं नृपं ह नु मु य ना धा ॥ म हा भे धा न्नु मू क य व ज्र वृ द्दी य स र्ज य न ॥ गहं नो र्ग ॥ स म
 सुष्टा व र्ग ॥ भव ज वृ द्दी य ॥ मो र्गं ल्य सान्ना व न य य व र्ग ॥ य पृ थ गी ॥ धा मु भव द्दी य ॥ धा पि क र्ता ॥ ह नृ प न्न ॥ मो हं ला य न स क ला य य व र्ग ॥
 हं ला य न ॥ अथ क वृ प या न व र्ग ॥ भव ज वृ द्दी य ॥ मो र्गं ल्य सान्ना व न य य व र्ग ॥ य पृ थ गी ॥ धा मु भव द्दी य ॥ धा पि क र्ता ॥ ह नृ प न्न ॥ मो हं ला य न स क ला य य व र्ग ॥
 हं ला य न ॥ अथ क वृ प या न व र्ग ॥ भव ज वृ द्दी य ॥ मो र्गं ल्य सान्ना व न य य व र्ग ॥ य पृ थ गी ॥ धा मु भव द्दी य ॥ धा पि क र्ता ॥ ह नृ प न्न ॥ मो हं ला य न स क ला य य व र्ग ॥

बतमा
 ५२

कुरु मा र्गिणी वाजा इष्टं नाभान् यत्नमाना सेन्ये र्शं
 न्नरु सन्नाहं वाधयामासु सर्वं ॥ कथं नाभान् नृप इष्टं निरुद्धा ववहि मे । सेन्ये निरुद्धं मां गहं ध्यामां धनां गृहं ययुः ॥ अथ सो नृपती वाजा सेन्ये च तवा
 हनं शोकात्ता गहं रवगता इष्टा विस्मिन् रवपदं ययुः ॥ गहं विस्मिन् रवगता गहं नृप कय कुरु कुरु गहं ॥ पाषाणि धर्मि मया । गृहं सो ला कास्मा ययुः ॥ गहं वाव
 सिर्गहं ला सवर्गं रसं गहं जि न ॥ नका कुरु मही नी गहं मो हं ला भव मादि शता । गहं मो हं ला मो र्गं नृपं व कुरु स सेन्ये की । कु व ना गहं ॥ सो मुष्टा वज्र व
 र्धं नि वा नय न ॥ ॐ ह्यादि र्मुनी उ स पु त्वा मो हं ला मु डि न ॥ गहं वि स पु मि ह्ना य सह सो न दं ध मा य यी ॥ गहं मो र्गं नृपं इष्टं स सेन्ये सा धु मा चि र्गं ।
 गहं का यं से मो गे ल्य ॥ स मा धि वि द ध क र्ता ॥ अथ ना ग ग हं स व र्गं नृपं ह नु मु य ना धा ॥ म हा भे धा न्नु मू क य व ज्र वृ द्दी य स र्ज य न ॥ गहं नो र्ग ॥ स म
 सुष्टा व र्ग ॥ भव ज वृ द्दी य ॥ मो र्गं ल्य सान्ना व न य य व र्ग ॥ य पृ थ गी ॥ धा मु भव द्दी य ॥ धा पि क र्ता ॥ ह नृ प न्न ॥ मो हं ला य न स क ला य य व र्ग ॥
 हं ला य न ॥ अथ क वृ प या न व र्ग ॥ भव ज वृ द्दी य ॥ मो र्गं ल्य सान्ना व न य य व र्ग ॥ य पृ थ गी ॥ धा मु भव द्दी य ॥ धा पि क र्ता ॥ ह नृ प न्न ॥ मो हं ला य न स क ला य य व र्ग ॥
 हं ला य न ॥ अथ क वृ प या न व र्ग ॥ भव ज वृ द्दी य ॥ मो र्गं ल्य सान्ना व न य य व र्ग ॥ य पृ थ गी ॥ धा मु भव द्दी य ॥ धा पि क र्ता ॥ ह नृ प न्न ॥ मो हं ला य न स क ला य य व र्ग ॥

ममहाकमात्यस्य कवचानां सह प्रद्युम्नो यथोक्तस्य कवचवापनजागता बृहत्प्रिया ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स
गां सत्कृतं सर्वद ॥ निनाय सर्वनाकस्य स्वयं प्रद्युम्नो यथोक्तस्य कवचवापनजागता बृहत्प्रिया ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स
निको यो गृहस्थः सत्कृतं सर्वद ॥ निनाय सर्वनाकस्य स्वयं प्रद्युम्नो यथोक्तस्य कवचवापनजागता बृहत्प्रिया ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स
धिमो प्रियका ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स
पाधनं ववद्विनेयं सत्कृतं सर्वद ॥ निनाय सर्वनाकस्य स्वयं प्रद्युम्नो यथोक्तस्य कवचवापनजागता बृहत्प्रिया ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स
निधायमाका ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स
ययका ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स
सापविनिविदिमां प्रयाव ॥ इति कदान कथितं ४ काशनागिने धूर्यका ॥ गिरायस्य कवचानां स

वल्गुमा

विनाशिनं नृपं इह निर्वृत्तपदकां किं वा। नाहं धर्ममहिम्ना कुरु वाधिवर्यामहावृत्तां॥ निपुणप्रवर्तमानि प्राहावयत्समववीणा। शुभं नृजल्यूनवन्द्यदेवदाने
जिनादिनां तथा हरेण प्रवक्ष्यामि प्रवावो नुमादय। सहस्रकृष्णस्रक्वातिनामाऽकथ्यते हानां सुविलासहासा। प्रीतिप्रदाऽपुष्पकेन विवन्निप्रोद
भूवत्यधविदुःकथयथा। नृपयानुपमनाज न्यथमपुनरापि नृपिष्ठा नृपमाहात्म्यं वक्ष्यामि नृपवाधने॥ गथागकं कथयिष्ये अवस्थाविहिताय म
ज्जोहयमहाद्यानविहानसो हरेण यथा॥ गतिमन्त्रवत्समं कथयिष्यामि नृपनिर्मलवत्॥ गुरुवत्सुपवृद्धाख्यऽपीमानुहयनिर्महाना॥ नृपमाहृदयि
ऽपुष्पाहसकारेणाविवक्ष्यते॥ पवसेचि नृपयानुमाका नृपवत्सवयः॥ गत्यज्जन्मदिनजागृज्जन्ममया मरुतान्। प्रकीर्तय नृपवत्सवयऽपुष्पवत्
कुरु नृपसंगडुऽकृष्णान्धनैः। लोकाकौतुहलऽकाशऽपूर्वकदित्यमाययऽसंगीतविभुऽकालेकलानिवयने गिरः। नृपवत्सव
मात्सर्वलाकलावननन्दनऽसङ्गनेऽपुनिका रागगुञ्जलसुविहृषणी। नृपमनामवां नृपवत्सवयवनी॥ कदाचिदर्थरुऽकुरुऽसप्रमनजिह्वऽसुनी। न
नृवीवनविह्वलसहज नृविवाजिगां। केन्यां वीवनकन्याख्यालावधललिताननऽ। उद्यानदलीनायागदिदलीयनलावनी॥ अक्रिष्ट नृपामोलाक नृपमय

[illegible][illegible]

मनीष्वरगवकर्मपा कनकुमायमहादिकशाहे मनदनिनायागित्तममादयमहनि॥००॥वीववकन्याचमस्तुगास्यवधूनवा।कनपूथवि
पाकनजीविगादपिवसुगा॥००॥निमृष्टरुकिरी।नसर्वविहगवा।जिनशकनम्वरुपनपुसांयु।आइगावित्तनयश॥यइदावेयइदिनयेडाजि
इयदइरीसुहलीयइययकाकेनसर्वपुगका।इवी।पुषुवाउ।युवकगमियदास्यपिकुनपुसांयुइकमहथाय।वाकइयमवमोदवाग॥पुवा
गीरगवाचैद्याविपस्वीनामधर्मनाटा।तेवरु।सुगन।भेला।वननाह।कथागनशा।प्रवकेति।इतिरेसाई।सर्वसिवानुकन्यया।ववावपाउमोदाये
गाहोवचमम॥००॥मिन्नवमनकनकुमायमहादिकशा।पुवावमनिचिडीठकचादानुमयगज।मनमोसमुपायानमहमसुगनीजिन।आच
नदसुवधुीरकनूला।निचलावन॥रगवकनमाला।कुपचारकनमूखोमुदा।जीजागजनिवया।पुपसत्वेवंसमुवडु॥रगनावया।केकुकिकिइय
मीविद्येग।नरुकी।उरुमोउकपुदहुंरुपुगुका॥नमो।रगवा।इइरुगया।हविमनात्रयी।दययाववस्य।विदधेदप्रदकिनश॥सम्यकिहपसा
दनदइरगवका।भो।पतिभनीविवाहायवउदुदायमीथश॥महादिककनजममहयाहुसाचिन।वाहनं।महसीवकुमानस्यपुहमकिशसा

केन्यापिमनइइसंसकंचानुवीवरंममवीववयकनजस्ययादित्यविक्रयक॥कनसपुविधाननजागायहकिमांशनी॥००॥वीववकन्यापिसंजा
गावीववावेगा॥नुवमोजविजानी।दिंसमानकर्मसाधेनं।सर्वगोपिसुखइइरुवोमिपवापिरुवहथा॥पुहनकर्मसि।सोखामिंमोयनसदा।रुपुन
इइरुवमवसा।मिपिननापिमिपिनो।मनेवयलुनकमसिउवकलतंववग।अइकंकीयमनवकर्मकापिकुदावन।नामिहियकनकेमिइयननादकेवपि
पुष्यननानि।अपिकीयननापिरुमिपुनन।अकिहिकमा।सिकत्यकाटिगेनवपि।सामणी।प्राप्यकालंचरुसंकिरवतुदहिनां॥अन्यथापिवकमीनिनइ
नकिकथेवन।उवंमला।पुषुववविगचेलयासदा॥००॥यादिइमनी।अपु।वामनृपमिमुदा।नाथमिंपमि।इयनलोमं।हंगुहंययो॥मनभररावान
धकावाकथा॥००॥रा।यरी।आदिमन्याककल्या।वीकययसमादि॥गा।महा।समुयादिइ।कुमानवसहजायया॥पुवानुमादनाइवागकुनवडु।मिद
गा।मनमोजाकवेवा।एकी।संसानवासना।पवचनिजिगइ।मोपुडावाधिमवापहु॥अथमहि।कवसवेइइ।मोषकवाविस्वा।सहसावाधिसपाकोवत
पुपमिविभिगा॥रगवां।अपिगेरु।मोइइ।पमिविभिगाना।सयधर्मनरावतपरावयनराधन॥विममसु।कजलायासयागनपुसां।रुवमिइगा।

संतापनरुवाद्यादिरुवात्रा ॥ तमाध्यायवर्गसमगोदवापसम्यक्कस्वकामपयार्जनाजकसमसाययि ॥ अथादिवसमासवर्षाकृत्रपययासा ॥
क्रियाकार्यक्रियानयित्वापेय ॥ अथवाजकमाननित्वावन्ति ॥ कामनावर्धमाननक्रमाभायगवीठनित्तमाननः ॥ सिंहस्यैलमदाना ॥ अथवामनपयुधावत्तान
॥ समानानद्यदयितया ॥ यथापिस्वराजकमानामहकृति ॥